सुरः अल-अनकबूत

इक्कीसवां पारः उत्लु मा ऊहि-य

सूरतुल-अन्कबूति आयात ४५ से ६९

उत्लु मा ऊहि-य इलै-क मिनल्किताबि व अक़िमिस्सला-त ط इन्नस्सला-त
तन्हा अनिल् - फ़ह्शा-इ वल्मुन्करि ط व ल-ज़िक्रुल्लाहि 'अक्बरु ط वल्लाहु
यअ्-लमु मा तस्-नअून (४५) व ला तुजादिलू अह्लल्किताबि इल्ला बिल्लती
हि-य अह्सनु ق इल्लल्लज़ी-न ज़-लमू मिन्हुम् व क़ूलू आमन्ना बिल्लज़ी
उन्ज़ि-ल इलैना व उन्ज़ि-ल इलैकुम् व
इलाहुना व इलाहुकुम् वाहिदुं व्-व नह्नु लहू
मुस्लिमून (४६) व कज़ालि-क अन्ज़ल्ना
इलैकल्-किता-ब ط फ़ल्लज़ी - न आतैनाहुमुल्-
किता - ब युअ्मिनू - न बिही ج व मिन्
हाउलाइ मंय्युअ्मिनु बिही ط व मा
यज्हदु बिआयातिना इल्लल् - काफ़िरून
(४७) व मा कुन्-त तत्लू मिन् क़ब्लिही
मिन् किताबिंव्-व ला तखुत्तुहू बियमीनि-क
इज़ल्-लर-ताबल्-मुब्तिलून (४८) बल् हु-व
आयातुम् - बय्यिनातुन् फ़ी सुदूरिल्लज़ी-न
ऊतुल्अिल-म ط व मा यज्हदु बिआयातिना
इल्लज़्ज़ालिमून (४९) व क़ालू लौला

اتل مآ اوحى ۲۱ — ۳۲۱ — العنكبوت ۲۹

اُتْلُ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنَ الْكِتٰبِ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ ؕ اِنَّ الصَّلٰوةَ
تَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ ؕ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا
تَصْنَعُوْنَ ۝ وَلَا تُجَادِلُوْٓا اَهْلَ الْكِتٰبِ اِلَّا بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ
اِلَّا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ وَقُوْلُوْٓا اٰمَنَّا بِالَّذِيْٓ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَاُنْزِلَ
اِلَيْكُمْ وَاِلٰهُنَا وَاِلٰهُكُمْ وَاحِدٌ وَّنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ۝ وَكَذٰلِكَ
اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ ؕ فَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ۚ
وَمِنْ هٰٓؤُلَآءِ مَنْ يُّؤْمِنُ بِهٖ ؕ وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا الْكٰفِرُوْنَ ۝
وَمَا كُنْتَ تَتْلُوْا مِنْ قَبْلِهٖ مِنْ كِتٰبٍ وَّلَا تَخُطُّهٗ بِيَمِيْنِكَ اِذًا
لَّارْتَابَ الْمُبْطِلُوْنَ ۝ بَلْ هُوَ اٰيٰتٌ بَيِّنٰتٌ فِيْ صُدُوْرِ الَّذِيْنَ
اُوْتُوا الْعِلْمَ ؕ وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا الظّٰلِمُوْنَ ۝ وَقَالُوْا لَوْلَآ
اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيٰتٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قُلْ اِنَّمَا الْاٰيٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَاِنَّمَآ
اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ اَوَلَمْ يَكْفِهِمْ اَنَّآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ يُتْلٰى
عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَرَحْمَةً وَّذِكْرٰى لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝
قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ شَهِيْدًا ۚ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ ؕ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْبَاطِلِ وَكَفَرُوْا بِاللّٰهِ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمُ
الْخٰسِرُوْنَ ۝ وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ ؕ وَلَوْلَآ اَجَلٌ مُّسَمًّى
لَّجَآءَهُمُ الْعَذَابُ ؕ وَلَيَاْتِيَنَّهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝

منزل ۵

उन्ज़ि - ल अलैहि आयातुम् - मिर्रब्बिही ط क़ुल् इन्नमल् - आयातु
अिन्दल्लाहि ط व इन्नमा अ-न नज़ीरुम् - मुबीन (५०) अ - व लम्
यक-फ़िहिम् अन्ना अन्ज़ल्ना अलैकल्-किता-ब युत्ला अलैहिम् ط इन्-न फ़ी
ज़ालि-क ल-रह्-म-तंव्-व ज़िक्रा लिक़ौमिंय्युअ्मिनून ★ (५१) क़ुल् कफ़ा
बिल्लाहि बैनी व बैनकुम् शहीदन् ج यअ्-लमु मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि ط
वल्लज़ी - न आमनू बिल्बातिलि व क - फ़रू बिल्लाहि ला उलाइ - क
हुमुल्ख़ासिरून (५२) व यस्तअ्-जिलून-क बिल्अज़ाबि ط व लौला अ-ज-लुम्-
मुसम्मल्-लजा-अ-हुमुल्-अज़ाबु ط व ल-यअ्ति-यन्नहुम् बग़्त-तंव्-व हुम् ला यश्अुरून (५३)

★रु. ५/१ आ ७

(ऐ मुहम्मद !) यह किताब जो तुम्हारी तरफ़ वह्य की गयी है, उस को पढ़ा करो और नमाज़ के पाबन्द रहो। कुछ शक नहीं कि नमाज़ बेहयाई और बुरी बातों से रोकती है और ख़ुदा का ज़िक्र बड़ा (अच्छा काम) है और जो कुछ तुम करते हो, ख़ुदा उसे जानता है। (४५) और अह्ले किताब से झगड़ा न करो, मगर ऐसे तरीक़े से, कि निहायत अच्छा हो, हां जो उन में से बे-इंसाफ़ी करें, (उन के साथ इसी तरह झगड़ा करो) और कह दो कि जो (किताब) हम पर उतरी और जो (किताबें) तुम पर उतरीं, हम सब पर ईमान रखते हैं और हमारा और तुम्हारा माबूद एक ही है और हम उसी के फ़रमांबरदार हैं। (४६) और इसी तरह हम ने तुम्हारी तरफ़ किताब उतारी है, तो जिन लोगों को हम ने किताबें दी थीं, वे उस पर ईमान ले आते हैं और कुछ उन (मुश्रिक) लोगों में से भी इस पर ईमान ले आते हैं और हमारी आयतों से वही इन्कार करते हैं जो काफ़िर (शुरू ही से) हैं। (४७) और तुम इस से पहले कोई किताब नहीं पढ़ते थे और न उसे अपने हाथ से लिख ही सकते थे, ऐसा होता तो बातिल वाले ज़रूर शक करते। (४८) बल्कि ये रोशन आयतें हैं। जिन लोगों को इल्म दिया गया है, उन के सीनों में (महफ़ूज़) और हमारी आयतों से वही लोग इन्कार करते हैं, जो बे-इन्साफ़ हैं। (४९) और (काफ़िर) कहते हैं कि इस पर उस के परवरदिगार की तरफ़ से निशानियां क्यों नाज़िल नहीं हुयीं। कह दो कि निशानियां तो ख़ुदा ही के पास हैं और मैं तो खुल्लम-खुल्ला हिदायत करने वाला हूं। (५०) क्या इन लोगों के लिए यह काफ़ी नहीं कि हम ने तुम पर किताब नाज़िल की जो उन को पढ़ कर सुनायी जाती है। कुछ शक नहीं कि मोमिन लोगों के लिए इस में रहमत और नसीहत है। (५१) ★

कह दो कि मेरे और तुम्हारे दर्मियान ख़ुदा ही गवाह काफ़ी है। जो चीज़ आसमानों में और ज़मीन में है, वह सब को जानता है और जिन लोगों ने बातिल को माना और ख़ुदा से इन्कार किया, वही नुक़्सान उठाने वाले हैं। (५२) और ये लोग तुम से अज़ाब के लिए जल्दी कर रहे हैं। अगर एक वक़्त मुक़र्रर न (हो चुका) होता तो उन पर अज़ाब आ भी गया होता और वह (किसी वक़्त में) उन पर ज़रूर आ कर रहेगा और उन को मालूम भी न होगा। (५३) ये तुम से अज़ाब के

★रु. ५/१ आ ७

www.IslamInHindi.org

सुरः अल-अनकबूत

यस्तअ्-जिलून-क बिल्अ़ज़ाबि व इन्-न ज-हन्न-म लमुही-त-तुम्-बिल्काफ़िरीन
(५४) यौ-म यग़शाहुमुल्-अ़ज़ाबु मिन् फ़ौक़िहिम् व मिन् तह्ति अर्जुलिहिम्
व यक़ूलु ज़ूक़ू मा कुन्तुम् तअ्-मलून (५५) याअ़िबादि-यल्-लज़ी-न आमनू
इन्-न अर्-ज़ी वासि-अ-तुन् फ़इय्या-य फ़अ्-बुदून (५६) कुल्लु नफ़्सिन्
ज़ाइक़तुल्मौति सुम् - म इलैना
तुर्जअ़ून (५७) वल्लज़ी-न आमनू व
अ़मिलुस्सालिहाति लनुबव्वि-अन्नहुम् मिनल्जन्नति
ग़ु-र-फ़न् तज्री मिन् तह्तिहल् - अन्हारु
ख़ालिदी - न फ़ीहा निअ् - म अज्रुल् -
आमिलीन (५८) अल्लज़ी - न
स-बरू व अ़ला रब्बिहिम् य-त-वक्कलून (५९)
व-क-अय्यिम् - मिन् दाब्बतिल्ला तह्मिलु
रिज़् - क़हा अल्लाहु यर्ज़ुक़ुहा व
इय्याकुम् व हुवस्समीअ़ुल् -
अ़लीम (६०) व ल-इन् स-अल्तहुम् मन्
ख़-ल-क़स्समावाति वल्-अर्-ज़ व सख़्ख़-रश्शम्-स
वल्क़-म-र ल - यक़ूलुन्नल्लाहु फ़ - अन्ना

युअ्-फ़कून (६१) अल्लाहु यब्सुतुर्रिज्-क़ लिमंय्यशाउ मिन् अ़िबादिही व यक़्दिरु
लहू इन्नल्ला-ह बिकुल्लि शैइन् अ़लीम (६२) व ल-इन् स-अल्तहुम्
मन् नज़्ज़-ल मिनस्समाइ माअन् फ़-अह्या बिहिल्अर-ज़ मिम्बअ्-दि मौतिहा
ल-यक़ूलुन्नल्लाहु कुलिल्हम्दु लिल्लाहि बल् अक्सरुहुम् ला यअ् - क़िलून
★ (६३) व मा हाज़िहिल् - हयातुद्दुन्या इल्ला लह्वुंव्-व लअिबुन्
व इन्नद्दारल्-आख़ि-र-त लहि-यल्-ह-य-वानु लौ कानू यअ्-लमून (६४)
फ़इज़ा रकिबू फ़िल्फ़ुल्कि द-अ़ - वुल्ला - ह मुख़्लिसी - न लहुद्दी - न
फ़ - लम्मा नज्जाहुम् इलल्बर्रि इज़ा हुम् युश्रिकून (६५)
लि-यक्फ़ुरू बिमा आतैनाहुम् व लि-य-त-मत्तअ़ू फ़सौ-फ़ यअ्-लमून (६६)

लिए जल्दी कर रहे हैं और दोज़ख़ तो काफ़िरों को घेर लेने वाली है। (५४) जिस दिन अज़ाब उन
को उन के ऊपर से नीचे ढांक लेगा और (ख़ुदा) फ़रमाएगा कि जो काम तुम किया करते थे, (अब)
उन का मज़ा चखो। (५५) ऐ मेरे बन्दो! जो ईमान लाए हो, मेरी ज़मीन फैली हुई है, तो मेरी
ही इबादत करो। (५६) हर नफ़्स मौत का मज़ा चखने वाला है, फिर तुम हमारी ही तरफ़ लौट
कर आओगे। (५७) और जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, उन को हम बहिश्त के
ऊंचे-ऊंचे महलों में जगह देंगे, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं। हमेशा उन में रहेंगे। (नेक) अमल
करने वालों का (यह) ख़ूब बदला है, (५८) जो सब्र करते और अपने परवरदिगार पर भरोसा
रखते हैं। (५९) और बहुत से जानवर हैं, जो अपनी रोज़ी उठाए नहीं फिरते। ख़ुदा ही उन को
रोज़ी देता है और तुम को भी और वह सुनने वाला (और) जानने वाला है। (६०) और अगर
उन से पूछो कि आसमानों और ज़मीन को किस ने पैदा किया और सूरज और चांद को किस ने
(तुम्हारे) हुक्म के ताबेअ़ किया, तो कह देंगे, ख़ुदा ने, तो फिर ये कहां उल्टे जा रहे हैं? (६१)
ख़ुदा ही अपने बन्दों में से जिस के लिए चाहता है रोज़ी फैला देता है और जिस के लिए चाहता है,
तंग कर देता है। बेशक ख़ुदा हर चीज़ को जानता है। (६२) और अगर तुम उन से पूछो कि
आसमान से पानी किस ने बरसाया, फिर उस से ज़मीन को उस के मरने के बाद (किस ने) ज़िंदा
किया, तो कह देंगे कि ख़ुदा ने। कह दो कि ख़ुदा का शुक्र है, लेकिन इन में अक्सर नहीं
समझते। (६३) ★

और यह दुनिया की ज़िंदगी तो सिर्फ़ खेल और तमाशा है और (हमेशा की) ज़िंदगी की
(जगह) तो आख़िरत का घर है काश ये (लोग) समझते! (६४) फिर जब ये कश्ती में सवार
होते हैं तो ख़ुदा को पुकारते (और) ख़ालिस उसी की इबादत करते हैं, लेकिन जब वह उन को
निजात देकर ख़ुश्की पर पहुंचा देता है, तो झट शिर्क करने लग जाते हैं। (६५) ताकि जो हम ने
उन को बख़्शा है, उस की ना-शुक्री करें और फ़ायदा उठाएं, (सो ख़ैर,) बहुत जल्द उन को मालूम

www.IslamInHindi.org

सुरः अल-अनकबूत

अ-व लम् यरौ अन्ना ज-अल्ना ह़-र-मन् आमिनंव-व यु-त-ख़त्तफ़ुन्नासु मिन् ह़ौलिहिम्,
अ-फ़ बिल्बातिलि युअ्मिनू-न व बिनिअ्-मतिल्लाहि यक्फ़ुरून (६७) व मन्
अज़्-लमु मिम्मनिफ़्तरा अ-लल्लाहि कज़िबन् औ कज़्ज-ब बिल्ह़क़्क़ि लम्मा जा-अहू,
अलै-स फ़ी जहन्न-म मस-वल्-लिल्काफ़िरीन (६८) वल्लज़ी - न जाहदू
फ़ीना ल-नह्दियन्नहुम् सुबुलना, व इन्नल्ला-ह
ल - मअल् - मुह़्सिनीन ★ (६९)

★रु. ७/२ आ ६